डायमंड शाश्वत कथा माला

रामायण के अमर पात्र

हनुमान

उपन्यास

डॉ. विनय

रामायण के अमर पात्र

पवनपुत्र हनुमान

eISBN: 978-93-5278-425-7
© प्रकाशकाधीन
प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन: 011-40712100, 41611861
फैक्स: 011-41611866
ई-मेल: ebooks@dpb.in
वेबसाइट: www.diamondbook.in
संस्करण: 2017
पवनपुत्र हनुमान
लेखक: डॉ. विनय

भूमिका

रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के विराट् कोष हैं। और इन दोनों में रामायण का सम्मान भक्ति की दृष्टि से महाभारत से अधिक है। यद्यपि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का प्रतिपादन है और महाभारत में कौरवों पांडवों की कथा के बहाने कृष्ण का ब्रह्मत्व प्रतिष्ठित किया गया है। रामायण का मान सामान्य जन में इसलिए अधिक है कि उसके चरित नायक राम का जीवन चरित्र व्यक्ति और समाज दोनों के लिए जीवन मूल्य की दृष्टि से अनुकरणीय है।

आदिकवि वाल्मीकि ने सम्पूर्ण राम कथा में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिपादित कर एक महान सांस्कृतिक आधार प्रतिष्ठित किया था और उसके बाद अनेक प्रकार से राम कथा का स्वरूप विकसित होता रहा। जैन धर्मावलंबियों ने अपने ढंग से इस कथा को प्रस्तुत किया और बाद के आने वाले रचनाकारों ने -**हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता**- के आधार पर राम की कथा को उसके मूल्य की रक्षा करते हुए अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने राम कथा को भक्ति का व्यावहारिक केन्द्रबिन्दु बना दिया। उनके राम भक्ति के आधार हैं और उनका जीवन ही अनुकरणीय है। गोस्वामी तुलसीदास के बाद भी राम कथा को विभिन्न रूपों में अनुभव किया जाता रहा और जहां-जहां इस विराट भाव भूमि में कवियों की दृष्टि में, जो स्थल मानवीय दृष्टि से उपेक्षित रह गये उन्हें केन्द्र बनाकर राम की कथा में अन्य आयाम जोड़ने का उपक्रम भी जारी रहा।

राम कथा हमारे जहां भक्ति का बहुत बड़ा मूल्य प्रस्तुत करती है वहां कुछ ऐसे प्रश्न भी छोड़ देती है जिनका कोई तर्कपूर्ण समाधान शायद नहीं मिल पाता। और जब मन किसी बात को मानने से मना कर दे और उसका तर्कपूर्ण समाधान न हो तब एक गहरे रचनात्मक द्वन्द्व की रचना होती है। हमने रामकथा के विभिन्न पात्रों को उस कथा के मूल आदर्श वृत्त में ही रखकर मनन और अनुसंधान से, औपन्यासिक रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है। क्योंकि, रामकथा में प्रत्येक पात्र किसी न किसी जीवन दृष्टि या जीवनमूल्य को भी प्रतिपादित करता है। राम यदि आदर्श पुत्र, पति है तो लक्ष्मण आदर्श भाई के रूप में प्रतिष्ठित है। और इसी प्रकार अन्य पात्रों का मूल मूल्य वृत्त भी देखा जा सकता है। अब आधुनिक दृष्टि में यह मूल मूल्य वृत्त कहां तक हमारे जीवन में रच सकता है यह बहुत बड़ा प्रश्न है। और इसलिए किसी भी लेखक का यह रचनात्मक प्रयास कि पुराकथा के पात्रों में क्या कोई मानसिक द्वन्द्व रहा होगा? क्या उन्होंने सहज मानव के रूप में होंठों को मुस्कराने की और आंखों को रोने की आज्ञा दी होगी? और तब हम यह अनुभव करते हैं कि उस विराट मूल्य के आलोक में छोटा-सा मानवीय प्रकाश खण्ड उठाकर अपने दृष्टिकोण से अपने पाठकों के सामने प्रस्तुत कर सकें। राम गाथा के विशिष्ट पात्रों पर औपन्यासिक रचनावली के पीछे हमारा यही दृष्टिकोण रहा है कि हम उस विराट को अपनी दृष्टि से अपने लिए किस रूप में सार्थक कर

सकते हैं।

गोस्वामी जी के शब्दों में–

सरल कवित, कीरति बिमल, सुनि आदरहिं सुजान।
सहज बैर बिसराय रिपु, जो सुनि करै बखान ।।

और हम इस रास्ते पर यदि चल नहीं पाते तो चलने की सोच तो सकते हैं। हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह रहा कि जहां-जहां राम कथा के बड़े-बड़े ग्रन्थ कुछ नहीं बोलते वहां उसी मूल्य चेतना में हम गद्य में कैसे उस अबोले के यथार्थ को चित्रित करें। पुराकथा की दृष्टि से जो सच हो सकता है और आधुनिक दृष्टि से जो स्वीकार भी हो ऐसे कथा तंत्रों को कल्पनाशीलता से रचते हुए हमारा हमेशा ध्यान रहा है कि मनुष्य के अन्तर का उदात्त भाव भी मुखर हो सके क्योंकि हमने जब-जब इन बड़े पात्रों से साक्षात्कार किया है तब-तब एक उदात्त तत्व की आलोक की तरह से दृष्टि के सामने आया है। उस आलोक में से थोड़ा बहुत अब हमारी ओर से आपके सामने है।

–डा. विनय
25 बैंग्लों रोड, दिल्ली-110007

पवनपुत्र हनुमान

जन्म कथा

सामने विशाल समुद्र, उठती-उतराती, लंबी छलांग मारती, किनारों से टकरा-टकराकर लौट जाती, दूध के फेन के समान लहरें। दूर-दूर तक इस महासागर का कोई छोर नहीं था। सीता की खोज में निकला वानर दल, उनके नेता अंगद, बुद्धिमान जामवन्त और महाबली हनुमान, सभी लोग विचार में डूबे हुए थे। कोई हल नहीं सूझ रहा था, कैसे समुद्र पार किया जाए?

इसका मतलब तो यह हुआ कि हम कभी मां जानकी को खोज ही नहीं पायेंगे। अंगद निराश था। कितने विश्वास के साथ भेजा था उन्हें श्रीराम ने। दण्डक वन से यहां तक छलांग लगाते आते उन्हें एक मास होने को आया था और अभी तक सीता का कहीं अता-पता नहीं लग पाया था। इस प्रकार तो सीता को खोजने के लिए दी गई अवधि ही पूरी हो जाएगी। कुछ न कुछ उपाय तो करना होगा।

अभी वे यह सोच ही रहे थे कि जामवन्त को ध्यान आया–अगर मैं प्रयास करूं तो नब्बे योजन तक छलांग लगा सकता हूं और यह समुद्र तो सौ योजन लंबा है। इसको पार करने के लिए तो कोई और उपाय ही ढूंढ़ना होगा। जामवन्त दरअसल बूढ़े हो गए थे। अगर पहले की बात होती तो निश्चय ही वे अब तक कई बार यह समुद्र लांघ गए होते। जामवन्त यह सोच ही रहे थे कि तभी उनकी दृष्टि हनुमान जी पर पड़ी। हनुमान! सभी जानते हैं, अपने शौर्य, बल, धैर्य, पराक्रम, बुद्धिमत्ता और प्रभाव में श्रेष्ठ हैं। यदि ये चाहें तो समुद्र पार कर सकते हैं। और यह सोचते हुए जामवन्त ने हनुमान के पास आकर कहा–

"वीरवर! तुम पवनपुत्र होकर समुद्र को लांघने में संकोच कर रहे हो। अपनी शक्ति को पहचानो हनुमान!"

"आप समझते हैं, मैं श्रीराम की सेवा नहीं करना चाहता?"

"नहीं, मैंने तो यही नहीं कहा लेकिन तुम चाहो तो यह समुद्र पार कर सकते हो। तुममें अपूर्व बल है हनुमान! तुम्हें अपने बल का पता नहीं।"

"भला मुझे अपने बल का पता क्यों नहीं होगा?"

"यह एक रहस्य की बात है। इस समय तुम अपना बल ही नहीं भूल बैठे बल्कि वह कारण भी भूल गए हो जिससे तुम्हारा यह बल तुम्हारे लिए अज्ञात हो गया है।"

"यह क्या गुत्थी है? मैं समझ नहीं पा रहा हूं।"

"और मैं बता नहीं पा रहा हूं। शायद तुम ही यदि अपने बाल्यपन की ओर दृष्टि दौड़ाओ तो